राजस्थान सरकार
न्यायालय जिला मजिस्ट्रेट, पाली (राजस्थान)

विविध ::76/2018

प्रार्थी	बनाम	अप्रार्थी
आदर्श कॉ–ओपरेटिव बैंक लिमिटेड, हेड ऑफिस– आदर्श भवन, तीन बत्ती, पो.बा.न. 32, सिरोही 307001 (राज.) शाखा कार्यालय– मण्डिया रोड, एल.आई.सी. बिल्डिंग के सामने, पाली 306401 (राज.) जरिये प्राधिकृत अधिकारी श्री भरतपुरी गोस्वामी		1. जगदीश प्रसाद गर्ग पुत्र गुलाबचंद गर्ग निवासी 118, आदर्श नगर, पाली (राज.) 2. श्रीमती पुष्पा देवी पत्नी जगदीश प्रसाद गर्ग, निवासी 118, आदर्श नगर, पाली (राज.) 3. श्री मनोज गर्ग पुत्र जगदीश प्रसाद गर्ग, निवासी 118, आदर्श नगर, पाली (राज.) 4. श्री नीरज कुमार गर्ग पुत्र जगदीश प्रसाद गर्ग, निवासी 118, आदर्श नगर, पाली(राज.) 5. श्री ओमप्रकाश बिंदाल पुत्र बद्रीप्रसाद बिंदाल निवासी 9, मीरा मार्ग, अमृत कुंज, भैरूघाट, पाली (राज.) 6 श्री अनिल कुमार पुत्र बद्री प्रसाद बिंदाल, निवासी 9, मीरा मार्ग, अमृत कुंज, भैरूघाट, पाली (राज.) 7 मैसर्स जगदीश डाईंग 1 जगदीशप्रसाद गर्ग 2 मनोज गर्ग पुत्र जगदीश प्रसाद गर्ग 3 श्रीमती अंजना गर्ग पत्नी नीरज गर्ग पता–इ–6, मण्डिया रोड, पाली मारवाड (राज.)

जिला मजिस्ट्रेट पाली (राजस्थान)

प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 14 दी सिक्यूराइटेशन एण्ड रिकन्सट्रक्शन ऑफ फाईनेन्शियल एस्सेट्स एण्ड एन्फोर्समेन्ट ऑफ सिक्युरिटी इन्ट्रेस्ट एक्ट 2002 (The Securitisation and Reconstruction of Financial Assets and Enforcement of Security Interest Act, 2002)

आदेश

दिनांक 31.10.18

प्रार्थी बैंक की ओर से यह प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 14 The Securitisation and Reconstruction of Financial Assets and Enforcement of Security Interest Act, 2002 के तहत पेश हुआ जो दर्ज रजिस्टर कर पत्रावली एवं दस्तावेजों का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया गया ।

प्रार्थी बैंक ने प्रार्थना पत्र में वर्णित किया कि अप्रार्थी संख्या 1 बैंक के ऋणी है, अप्रार्थी संख्या 2, 3 व 4 बैंक के सहऋणी है तथा अप्रार्थी संख्या 5, 6 व 7 जमानती है। अप्रार्थी संख्या 1, 2, 3 व 4 ने प्रार्थी बैंक से दिनांक 14.09.2017 को 16,00,000/–(अक्षरे सोलह लाख रुपये) को अपनी वित्तिय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आवेदन कर ऋण प्राप्त किया तथा ऋणी/ जमानती ने उपरोक्त ऋण व उस पर देय ब्याज व खर्चों के लिए अपनी प्रतिभूति स्वरुप अचल सम्पति जो अप्रार्थी संख्या 02 श्रीमती पुष्पादेवी पत्नी जगदीश प्रसाद गर्ग के नाम भारमुक्त आवासीय सम्पति जो प्लॉट न.–48–सी, आदर्श नगर विस्तार, पाली, जिला पाली (राज.) में स्थित है, जिसके पट्टा न. 2625/1969 है, जिसका क्षेत्रफल 30 X 40 कुल 1200 वर्गफुट है। जिसके उत्तर में श्री जेठाराम प्रेमराज का प्लॉट नं. 48 बी., दक्षिण में श्री लादुसिंह राजपूत का प्लॉट नं. 49 बी, पूर्व में 20 फीट रोड़ एवं पश्चिम में 20 फीट रोड है तथा एक अन्य सम्पति अप्रार्थी संख्या 7 मैसर्स जगदीश डाईंग, ई–6, इण्स्ट्रीयल ऐरिया, मण्डिया रोड, पाली के नाम रीको, पाली द्वारा जरिये लीज डीड दिनांक 10.11.1978 व रजिस्ट्रेशन दिनांक 06.12.1978 के द्वारा प्लॉट नम्बर ई–6, स्थित है। जिसका क्षेत्रफल 4000 वर्गमीटर है। जिसके उतर में प्लॉट न. ई–5, दक्षिण में महावीर नगर, पूर्व में रोड, पश्चिम में प्लॉट न. ई–13 है। अप्रार्थी के द्वारा ऋण इकरारनामा व साम्य मूलक बंधक सृजन करने

क्रमश पृष्ठ :: 2

जिला मजिस्ट्रेट, पाली

का पत्र आदि दस्तावेजात पर अपने हस्ताक्षर कर निष्पादित किया। अप्रार्थीगण ने ऋण प्राप्त करने के पश्चात ऋणी/जमानती ने ऋण इकरारनामा की शर्तो के अनुरुप ऋण खाते का संचालन नहीं किया जबकि अप्रार्थीगण को अपने उपरोक्त ऋण खाते का संचालन निष्पादित इकरारनामा के शर्तो के अनुरूप करना था। अप्रार्थीगण ने अपने स्वामित्व की सम्पति को प्रार्थी बैंक के पास जरिये Mortgage by deposit of title deeds के बंधक रखा। अप्रार्थीगण ने ऋण अनुबन्ध शर्तो के अनुरूप उक्त खाते में लेनदेन नहीं किया एवं इकरारनामा की शर्तो के अनुरूप देय राशि व ब्याज का भुगतान नहीं किया जो ऋण अनुबंध का स्पष्ट उल्लंघन हैं। अप्रार्थीगण को उक्त अधिनियम की धारा 13 (2) के अन्तर्गत नोटिस दिनाक 29.06.2018 को देकर बकाया राशि मय ब्याज के 16,71,536/– अक्षरे सोलह लाख इकत्तर हजार पाच सौ छत्तीस रूपये की मांग हेतु नोटिस दिया गया। देय नोशनल ब्याज व खर्चों की मांग की गई लेकिन ऋणी ने प्रार्थी बैंक को देय समस्त राशि का भुगतान नोटिस देने के उपरान्त भी नियत अवधि में नहीं किया। अतः अप्रार्थीगण द्वारा इस ऋण के लिये बतौर प्रतिभूतिस्वरूप बंधक रखे गये स्वामित्व की सम्पतिं का कब्जा एवं इससे संबंधित अन्य कोई दस्तावेज अप्रार्थीगण के कब्जे में हो तो उन दस्तावेजों को भी प्रार्थी बैंक को दिलाया जावें।

पत्रावली एवं प्रस्तुत दस्तावेजों का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया। पत्रावली के अवलोकन से स्पष्ट हैं कि प्रार्थी बैंक नें अप्रार्थीगण को अपनी वित्तिय आवश्यकताओं की पूर्ति 16,00,000/– अक्षरे सोलह लाख रूपये का ऋण दिया उक्त ऋण के बदले में इकरारनामा व उससे संबंधित दस्तावेजात तैयार कर अपने हस्ताक्षर के प्रार्थी बैंक के पक्ष में निष्पादित किये। प्रार्थी बैंक ने नियमानुसार ऋण वसूली के लिये अधिनियम की धारा 13(2) के अधीन अप्रार्थीगण को नोटिस भी जारी किया। नोटिस प्राप्ति के पश्चात भी अप्रार्थीगण ने बैंक को ऋण राशि का भुगतान नहीं किया। The Securitisation and Reconstruction of Financial Assets and Enforcement of Security Interest Act, 2002 की धारा 14 में उक्त रहन की गई सम्पति को प्रार्थी के कब्जें में दिलाये जाने का स्पष्ट प्रावधान हैं। जो इस प्रकार हैं:

14. Chief Metropolitan Magistrate or District Magistrate to assist secured creditor in taking possession of secured asset - (1) Where the possession of any secured assets is required to be taken by the secured creditor or if any of the secured assets is required to be sold are transferred by the secured creditor under the provisions of this act, the secured creditor may, for the purpose of taking possession or control of any such secured asset, request, in writing the Chief Metropolitan Magistrate or the District Magistrate within jurisdiction any such secured asset or other documents relating thereto may be situated or found, to take possession thereof, and the Chief Metropolitan Magistrate or, as the case may be, the District Magistrate shall, on such request being made to him --

(a) Take possession of such asset and documents relating thereto; and

(b) Forward such assets and documents to the secured creditor.

(2) For the purpose of securing compliance with the provisions of sub-section (1), the Chief Metropolitan Magistrate or the District Magistrate may take or cause to be taken such steps and use, or cause to be used, such force, as may, in his opinion, be necessary.

परिणामस्वरूप तथ्यों के सन्दर्भ में प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 14 The Securitisation and Reconstruction of Financial Assets and Enforcement of Security Interest Act, 2002 में प्रार्थी का प्रार्थना पत्र स्वीकार किया जाता हैं। आदेश की प्रति पुलिस अधीक्षक, पाली को भेजकर अप्रार्थीगण द्वारा प्रार्थी बैंक के पक्ष में बतौर प्रतिभूति स्वरुप अपने स्वामित्व की सम्पति जो ऊपर वर्णित किया हैं, के संबंध में थानाधिकारी, पुलिस थाना कोतवाली पाली, जिला पाली को निर्देशित करें कि वे उक्त भूमि का कब्जा व उससे संबंधित अन्य कोई दस्तावेज अप्रार्थीगण के कब्जे में हो तो उन दस्तावेजों को प्रार्थी बैंक को संभलाकर पालना रिपोर्ट भिजवाने हेतु पाबन्द करें। आदेश की एक प्रति कोतवाली थानाधिकारी, पाली, जिला पाली एवं प्रार्थी को आवश्यक कार्यवाही हेतु एवं पालनार्थ प्रेषित की जावें।

आदेश सुनाया गया ।

(सुधीर कुमार शर्मा)
जिला मजिस्ट्रेट, पाली